ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 36 कुल पृष्ठ-8 26 अप्रैल से 2 मई, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 ज्ये.शु.-12

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों की महत्त्वपूर्ण बैठक उत्साह के वातावरण में सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन को ऐतिहासिक बनाने के लिए आर्यों का किया गया आह्वान

देश–विदेश में संचालित समस्त गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियाँ तथा आर्य जनता हजारों की संख्या में होंगे एकत्रित

आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने तथा आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए केन्द्र सरकार से की जायेगी माँग

वेद ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने में आर्ष शिक्षा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है
– स्वामी अग्निवेश

सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों एवं गुरुकुलों के अधिकारी महासम्मेलन की तैयारी में निष्ठा से जुट जायें
– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुलों के इतिहास में सभी गुरुकुलों का महासम्मेलन पहली बार हो रहा है इसे सफल बनाना सभी गुरुकुलों का नैतिक कर्त्तव्य
– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

यह अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन रचेगा नया इतिहास
– प्रो. विट्ठलराव आर्य

गुरुकुल महासम्मेलन की सफलता सभी आर्यों का महत्त्वपूर्ण दायित्व
– पं. माया प्रकाश त्यागी

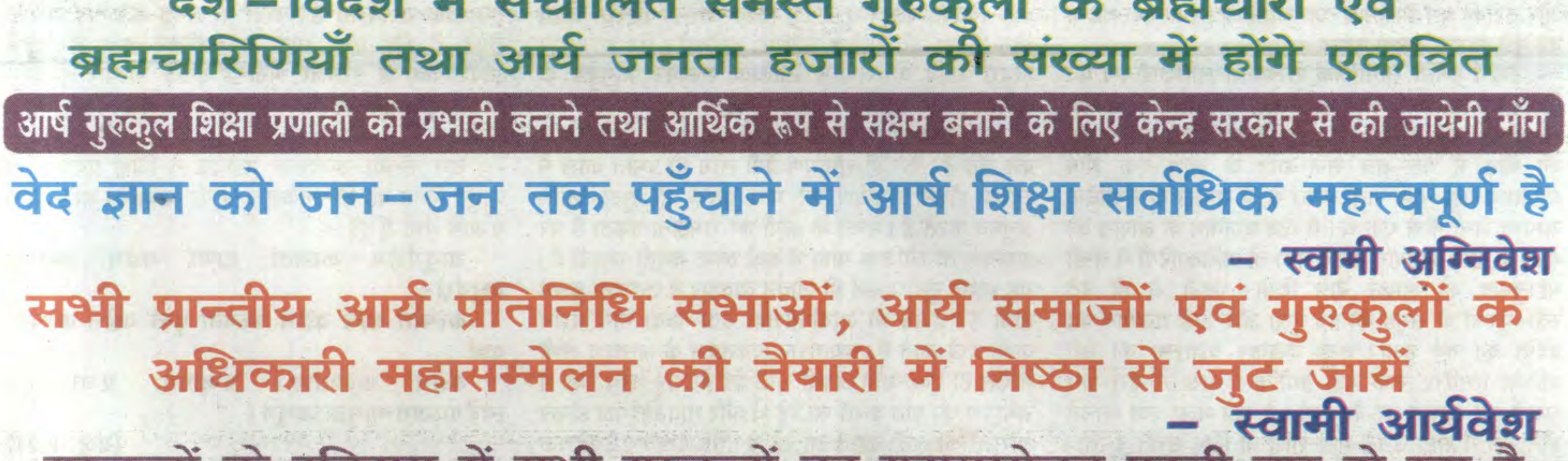

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग की अति महत्त्वपूर्ण बैठक 21 अप्रैल (शनिवार), 2018 को सभा भवन में बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुई। बैठक में सभा के अन्तरंग सदस्यों के अतिरिक्त विभिन्न प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारियों, वैदिक विद्वानों तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य द्वारा शोक प्रस्ताव, गत अन्तरंग की कार्यवाही की सम्पुष्टि एवं अन्य आवश्यक प्रक्रियाओं को पूरा करने के पश्चात् बैठक के मुख्य विषय अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, हरिद्वार को लेकर लगभग 3 घण्टे तक विचार–विमर्श चलता रहा। अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन को सफल बनाने तथा इसे ऐतिहासिक बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण सुझावों पर विस्तार से चर्चा हुई। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बैठक के माध्यम से देश के सभी आर्य समाजों, जिला सभाओं, प्रान्तीय सभाओं तथा समस्त गुरुकुलों का आह्वान किया कि वे सब गुरुकुल महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए युद्ध स्तर पर तैयारी करें। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि आर्य समाज के इतिहास में यह पहला अवसर है जब सभी गुरुकुल एक स्थान पर एकत्रित किये जा रहे हैं और आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता दिलवाने एवं विपुल आर्थिक सहयोग दिलवाने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है। स्वामी आर्यवेश जी ने महासम्मेलन के लिए अपील की कि सभी आर्यजन तन–मन–धन से सहयोग देकर सम्मेलन को सफल बनायें ताकि सरकार को हम अपनी मांगें मनवाने के लिए प्रभावशाली ढंग से प्रेरित कर सकें। स्वामी आर्यवेश जी ने इस विशाल कार्यक्रम की व्यवस्था के लिए आर्थिक सहयोग की भी अपील की।

गुरुकुल महासम्मेलन की अध्यक्षता आर्य समाज के तपोनिष्ठ संन्यासी, एक दर्जन आर्ष गुरुकुलों के संचालक, गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज करेंगे। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सदस्यों को आश्वस्त किया कि यह महासम्मेलन एक ऐतिहासिक सम्मेलन होगा जो आर्य समाज के इतिहास में पहली बार सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित किया जा रहा है। स्वामी जी ने कहा कि देश का कोई गुरुकुल नहीं बचेगा जो इस महासम्मेलन में सम्मिलित न हो सके। सम्मेलन को सफल बनाने के लिए स्वामी जी ने तन–मन–धन से पूर्ण शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आयुर्यज्ञेन कल्पताम्
यज्ञ हुआ आजीवन, हुआ न जीवन यज्ञ

– देवनारायण भारद्वाज

दो मित्र उद्यान में बैठकर बात कर रहे थे और अपने पूर्वजों की महिमा का बखान कर रहे थे। क्षितिज की ओर देखकर एक बोला हमारे बाबा ने इतना बड़ा, इतना बड़ा दालान बनवाया था जो क्षितिज से भी आगे निकला हुआ था। दूसरा बोला हमारे बाबा भी बड़े चमत्कारी थे। उन्होंने इतना लम्बा, इतना लम्बा बांस बनाया था, जिसकी सहायता से आकाश में घुमाकर बादलों से बर्षा करवा लेते थे। पहले मित्र ने यह सुनकर पूंछ लिया। वे उस बांस को रखते कहां थे? दूसरे मित्र ने सहज भाव से उत्तर दे दिया – 'इसमें क्या कठिनाई, वे उसे रखते थे – तुम्हारे बाबा के दालान में। यह बात आज भी उन लोगों पर सटीक बैठती है, जो बड़े गर्व के साथ कह दिया करते हैं – हमारे बाबा जी पक्के आर्य समाजी थे। उनका हवन कुण्ड विशाल था और उसकी धूम आसमान तक जाती थी। ऐसी एक घटना का मुझे सामना करना पड़ा।

सवर्ण वर्गीय सामाजिक संस्था के अधिकारीगण पर्व विशेष पर स्मारक पार्क में मुझसे यज्ञ का आग्रह करते चले आ रहे थे। वह दिन आ गया और मैं वहाँ पहुंच गया। पार्क की भीड़ में यत्र–तत्र सज–धज के साथ एक शीर्ष व्यक्तित्व यहां–वहां वार्ता व्यस्त थे, वे समाज के सर्वाधिक सम्पन्न जनों में से एक थे। मैं जब यजमान के आसन को भरने के लिए आह्वान करने लगा तो अधिकारियों ने उन्हीं महानुभाव को लाकर बैठा दिया। पहले से ही बैठे स्त्री–पुरुषों के समूह को हर्ष हुआ और उन्हें यजमान पद प्राप्ति का गर्व हुआ। उन्हें देखकर यज्ञारम्भ की मेरी प्रक्रिया इसलिए रूक गई, क्योंकि वे मुख में पूरा पान चबाते हुए आसन पर बैठ गये। वे मुझे भला क्या जानते होंगे, जो मैं सीधे उनसे मुख शुद्धि के लिए सचेत करता। यह कार्य मैंने मुख्य पदाधिकारी के माध्यम से कराया। आशीर्वाद शान्ति पाठ सहित यज्ञपूर्ण हुआ। वेदी पर तो उन्होंने मुझे दक्षिणा दी नहीं, किन्तु एक कक्ष में खड़े होकर संकेत से मुझे बुलाया और हाथ में दक्षिणा राशि निकालते हुए बताना प्रारम्भ कर दिया – मेरे बाबा पक्के आर्य समाजी एवं निष्ठावान याज्ञिक थे। लम्बी रेल यात्राओं में भी नित्य कर्म से निवृत्त होकर यज्ञ अवश्य करते थे, इसके लिए उनकी यज्ञ पेटिका साथ चलती थी। मैंने कहा बहुत सुन्दर। 'वयं स्याम पतयो रयीणाम्' (ऋ. 10.121.10) के जाप से ही तो आप धनैश्वर्यों के स्वामी बने हैं। मैंने मन में सोचा – आपने बाबा के धन को तो पकड़ लिया किन्तु यज्ञ ऐश्वर्य को छोड़ दिया।

यज्ञ करने से भी क्या होता है। सर्वांश में नहीं, अधिकांश में यज्ञ करने वाले 'स्वाहा इदन्नमम्' का उच्चारण करते हुए घृत सामग्री की आहुतियाँ लगाते रहते हैं तथा इसकी सुगन्ध को भी फैलाते रहते हैं, और इस प्रकार वे बाह्य वातावरण को तो शोधित कर लेते हैं, किन्तु इसके सार स्वत्व सें अपने अन्तःकरण की परिशोधन प्रक्रिया पर किंचित ध्यान नहीं देते हैं, और जो मन्त्रोच्चारण करते हैं, उससे उनका आचरण उत्कृष्ट न होकर कृष्ट या निःकृष्ट ही बना रह जाता है। यही कारण है कि घर परिवार हो अथवा संगठन सर्वांश में नहीं तो अधिकांश में देव पूजा (बड़ो का मान) पारस्परिक संगतीकरण एवं दान के दुरुपयोग के उदाहरण परिलक्षित होते हैं। इसी यज्ञ वेदी पर सरदार अर्जुन सिंह, पौत्र सरदार भगत सिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल ही नहीं पूर्वज आर्य मनीषियों ने प्रेरणा प्रोत्साहन प्राप्त कर वेदोत्थान व राष्ट्र निर्माण के लिए अपने जीवन अर्पित कर दिये थे, उनके समर्पण की नींव पर संगठन का प्रासाद तो खड़ा हो गया, किन्तु आज उसकी दीवालों में लगी दीमक से रक्षा करने वालों की प्रतीक्षा बनी रहती है।

स्थिति इतनी निराशा जनक भी नहीं है। जैसे एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है और जैसे एक बूंद विष सम्पूर्ण दुग्ध घट को विषैला कर देता है, वैसे ही थोड़े स्वार्थी अभियोगवादियों ने विराट संगठन को विघटन का जामा पहना दिया लगता है, अन्यथा आज भी गुरुकुल व शिक्षा जगत के आचार्य ब्रह्मचारी, उपदेशक राष्ट्र में अपने आदर्श से आर्य करण के अभियान में लगे हैं। देश–विदेश, राष्ट्रसंघ सर्वत्र विश्व अहिंसा दिवस, विश्व योग दिवस, वेद संहिता संरक्षण, अग्निहोत्र एवं शाकाहार दिवस आदि के रूप में सात्विक संस्कार जागरण के अभियान चल पड़े हैं।

यज्ञनिष्ठ लोग चलती ट्रेन में भी अपना दैनिक यज्ञ कर लेते हैं। वैसे ही रामायण प्रेमी लोग भी प्रभात काल में स्वच्छ होकर रामायण का पाठ करके ही सुख, शांति अनुभव करते हैं। मन्त्रों के अर्थों को समझना पड़ता है पर रामायण तो लौकिक भाषा में अर्थ स्पष्ट करती चलती है। यह सहज सुबोध अर्थ भी जीवन व्यवहार में उतारना दुलर्भ होता है। इसमें भी आर्योपदेशक यदा–कदा मार्ग दर्शन करते देखे जाते हैं। प्रयागराज एक्सप्रेस के आरक्षण श्रेणी में ऐसे ही एक यात्री अपनी सीट पर बैठकर उच्च स्वर में रामायण का पाठ करते जा रहे थे और भाव विह्वल होकर आंसुओं की लड़ी बहाते जा रहे थे। यह देखकर उपदेशक महोदय ने उनकी रामायण निष्ठा की प्रशंसा की और पाठ–प्रसंग जानने की इच्छा की। रामायणी जी ने बताया – इस समय राम भरत मिलाप का प्रसंग चल रहा है। निश्छल प्रेम प्रवाह को अनुभव कर मेरे नेत्रों से अश्रु प्रवाह हो गया। अच्छा तो आप प्रयागराज तीर्थ में त्रिवेणी स्नान के लिए जा रहे होंगे। यात्री ने कहा नहीं। अच्छा तो पवित्र भारद्वाज आश्रम दर्शनार्थ जा रहे होंगे। यात्री ने कहा नहीं। प्रादेशिक शिक्षा, निदेशालय या राज्य लोक सेवा आयोग मुख्यालय में किसी काम से जा रहे होंगे। यात्री ने कहा नहीं। फिर तो प्रयागराज विश्वविद्यालय में अपने किसी प्रोफेसर मित्र से मिलने जा रहे होंगे। यात्री ने कहा नहीं, और आगे प्रसंग को न बढ़ाते हुए वे बोल पड़ें महाशय! आपको पता नहीं प्रयागराज में उच्च न्यायालय भी है। मैं वहीं जा रहा हूँ। उपदेशक जी बोले तो आप प्रयागराज नहीं इलाहाबाद जा रहे हैं।

अच्छा तो यह बताइए वहाँ आपका क्या प्रकरण लम्बित चल रहा है? क्या बतायें बड़े भाई से एक लघु भूखण्ड के लिए अभियोग चल रहा है। दसियों वर्ष हो गये निर्णय नहीं हो पा रहा है। पड़ोस में रहते हुए भी बोल चाल बन्द है। उपदेशक जी ने कहा राम भरत मिलाप से तो आप इतने प्रभावित हैं कि अश्रुपात कर बैठते हैं। आपने कभी सोचा है कि अयोध्या जैसे चक्रवर्ती साम्राज्य के सिंहासन को दोनों भाईयों ने गेंद के समान ठोकर मारते हुए एक खेल बना दिया था। भरत ने अयोध्या से दूर नन्दीग्राम में एक तपस्वी के रूप में राम की प्रतीक्षा करते हुए शासन–संचालन किया था। एक ओर राम–भरत की मिलाई पर भावुकतावश रूलाई करते हैं और अपने ही बड़े भाई से लड़ाई करते हैं। मेरा परामर्श है आगे से या तो रामायण की पढ़ाई बन्द या बड़े भाई से लड़ाई बन्द। स्टेशन आया उपदेशक जी ने उतरते–उतरते आर्य समाज चौक जाने की बात कहते हुए विदाई ली। न्यायालय पहुँचने पर बड़े भाई जी वहां उनकी प्रतीक्षा करते मिले। दसियों वर्ष बाद छोटे भाई ने बड़े भाई के चरण पकड़े और क्षमा याचना की और बोले आज से भूखण्ड आपका है। अभियोग समाप्त होता है। मुझे आपका अखण्ड प्रेम चाहिए भूखण्ड नहीं। अब साथ–साथ हंसते हुए वापस लौटेंगे। पहले आर्य समाज चौक चलकर उपदेशक जी से मिलकर उनका आभार व्यक्त करते हैं। दोनों भाई वहाँ जाकर उपदेशक से मिलते हैं। उन्हीं के समक्ष बड़े भाई घोषणा करते हैं कि छोटे भाई का परिवार बड़ा है। इन्हें आवश्यकता है इसलिए भूखण्ड इनके परिवार के लिए छोड़ता हूँ। आर्योपदेशक ने प्रत्यक्ष घटित कर दिया – भरत मिलाप।

उस संध्या उपदेशक महोदय ने जिस प्रवचन को प्रस्तुत किया वह निम्नांकित मन्त्र पर आधारित था। प्रयाग में आगे चर्चा यूँ हुई :–

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन
कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो
यज्ञेन कल्पताम्। प्रजापतेः प्रजाऽअभूम स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम।

(यजु. 9.21)

भावार्थतः हमारा सम्पूर्ण जीवन यज्ञ से श्रेष्ठ कर्म से समर्थ हो प्राणों की शक्ति, दर्शन शक्ति, श्रवण शक्ति, पृष्ठ पीठ सभी यज्ञ से समर्थ हों। हमारे सभी क्रिया–कलाप यज्ञ से समर्थ हों। हम प्रजापति परमेश्वर की सच्ची प्रजा बनें। स्वयं देव स्वरूप बनकर अपने को ही नहीं अन्यों को भी सुखी बनाने में समर्थ हों तथा जीवन मुक्ति के साथ अमृतत्व को प्राप्त करें। हम ऐसे उत्तम कर्म करें कि विद्वानों से हमें सदैव शाबाशी मिलती रहें। हम अपने जीवन को यज्ञ का आकार प्रकार देते हुए प्रभु प्रजा सभी को प्रसन्न बनाने के लिए क्षमता भर उद्यत रहें। इस यज्ञीय भावना को रचनात्मक रूप देने के लिए साधनविहीन व्यक्तियों के उदाहरण तो बहुत मिल जाते हैं, किन्तु सुसम्पन्न सज्जन भी सुलभ होते रहते हैं। यज्ञ को आचमन से आरम्भ करने वाले याज्ञिक जल के अमृत रूप को समझ कर नित्य ब्रह्मामृत में सराबोर होने की कामना करते हुए स्वाहा का सुख बोधन करते हैं। उस दिन यह यज्ञ क्रिया फलित होती देखी गई, जिस दिन सन्त एकनाथ पैदल गंगोत्री से कन्धे पर गंगाजल की कांवर लेकर रामेश्वर जी पर चढ़ाने जा रहे थे। उन्होंने वही जल मरुस्थल में प्यास से तड़पते गधे को पिला दिया और वह उठकर चल दिया। साथी साधुओं की निन्दा नकारने में सन्त एकनाथ ने क्षणभर की देर नहीं लगाई। देखा साक्षात् गंगाधर रामेश्वर भगवान यहीं तृप्त होने आ गये और मुझे कांवर के बोझ से मुक्त कर दिया।

क्या आपको नहीं लगता – "स विशोऽनु व्यचलत्" (अथर्व 15.9.1) वह व्रात्य परमात्मा ऐसे आस्थावान भक्तों की ओर विचरणशील हो जाता है। धर्मराज युधिष्ठिर योगिराज कृष्ण की भांति ही यज्ञप्रेमी थे। राजसूय यज्ञ इसका संकेतक है। उनके जीवन में यज्ञ ज्योति जाज्वल्यमान थी। महाभारत जैसे युद्ध के मध्य भी वे लड़ाई के बाद रात्रि में वेश बदलकर घायल सैनिकों की पीड़ा कम करने के लिए युद्ध क्षेत्र में चले जाते हैं। एक दिन अनुज सहदेव ने इस निमित्त उन्हें वेश बदलते देख लिया और कहा यह तो ठीक है कि आप घायलों की वेदना कम करने के लिए जाते हैं, किन्तु वेश क्यों बदलते हैं? उन्होंने कहा कि यदि मैं अपने असली वेश में जाऊँगा तो शत्रु सैनिक मेरी इस सेवा को ठुकरा सकते हैं। उस दिन सहदेव ने भी यज्ञ धर्म के रहस्य को समझ लिया था। हमने स्वाहा को कितना सराहा आइये विचार करें।

पं. ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति स्मृति चतुर्थ आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 20 से 27 मई, 2018 तक

स्थान : आर्य समाज कलकत्ता, 19 विधान सरणी, कोलकाता–700006

आयोजक : आर्य समाज कलकत्ता।

संयोजिका : श्रीमती पं. अर्चना शास्त्री, मो.– 943 423 643 2

निवेदक – श्री सुरेश जायसवाल–प्रधान आर्य समाज कलकत्ता, श्री दीपक आर्य–मंत्री आर्य समाज कलकत्ता

विशेष :– शिविर स्थल पर शनिवार 19 मई, 2018 शाम तक प्रत्येक समाज से 1–2 सदस्य मैट्रिक, आयु 50 तक ही भेजें।

सम्पर्क सूत्र :– पं. वेद प्रकाश शास्त्री–9007076899, पं. मधुसूदन शास्त्री–9476155309, पं. अपूर्व देव शर्मा–9733792349, पं. वेदभानु शास्त्री–7687960815, पं. विजन शास्त्री–9593258115, पं. सतीशचन्द्र मण्डल–8420094002, आचार्य डॉ. ब्रह्मदत्त आर्य–8972093852, डॉ. तारक नाथ माइति–9729662106, डॉ. प्रताप राय–8900708391, महात्मा प्रेमभिक्षु–434246432

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार

दिनांक–6 से 8 जुलाई, 2018 के सम्बन्ध में

आवश्यक सूचनाएँ

आप अपने आने की सूचना अग्रिम दें

जो महानुभाव तथा जो गुरुकुल इस महासम्मेलन में आना चाहते हैं उनसे प्रार्थना है कि वे अग्रिम रूप से अपने आने की सूचना सार्वदेशिक सभा के कार्यालय "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 में अविलम्ब देने की कृपा करें। ताकि आपके आवास तथा भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

देश–विदेश के सभी गुरुकुल महासम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए तैयारी करें

देश–विदेश में चल रहे छात्र एवं छात्राओं के समस्त गुरुकुलों के आचार्यों, आचार्याओं एवं व्यवस्थापकों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे अपने–अपने गुरुकुलों के सभी छात्रों को महासम्मेलन में लाने की योजना बनायें। इस अवसर पर गुरुकुलों के आचार्यों का महासम्मेलन की ओर से अभिनन्दन भी किया जायेगा।

गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राएँ महासम्मेलन में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने की तैयारी करे

गुरुकुल महासम्मेलन में प्रयास किया जायेगा कि गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राओं को अपनी प्रतिभा का परिचय देने के लिए विभिन्न सम्मेलनों में अवसर दिया जायेगा। अतः आप सब अभी से वेद, दर्शन, अष्टाध्यायी आदि ग्रन्थों को कंठस्थ करने तथा भाषण एवं नाटक आदि तैयार करने में जुट जायें।

दान की अपील

महासम्मेलन की व्यवस्था के लिए विपुल धनराशि की आवश्यकता होगी। अतः सभी आर्य समाजों तथा दानवीरों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे वैदिक संस्कृति एवं आर्ष शिक्षा प्रणाली को प्रतिष्ठित करने वाले इस महायज्ञ में अपनी आहुति अवश्य डालें। इसके लिए आप अपनी संस्था, आर्य समाज या व्यक्तिगत रूप से दान देकर तथा अपने प्रयत्न से दान संग्रह करके सम्मेलन हेतु भिजवाकर हमारा सहयोग करें। बूंद–बूंद से घड़ा भरता है अतः प्रत्येक आर्य एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थक को इस अवसर पर प्रयास करना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों के पास जाकर धन एकत्रित करें तथा उन्हें महासम्मेलन में आने का निमंत्रण दें।

6 से 8 जुलाई, 2018 को कोई अन्य कार्यक्रम न रखने की अपील

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर 6 से 8 जुलाई, 2018 को कोई भी आर्य समाज एवं संस्था अन्य कोई कार्यक्रम आयोजित न करके हरिद्वार पहुँचने की कोशिश करें। इससे आर्य समाज का संगठन अनुशासित एवं प्रभावशाली बनेगा। हम सभी के प्रयास एवं सामूहिक शक्ति प्रदर्शन से हम अपनी बात सरकार से मनवाने में अवश्य सफल होंगे।

परस्पर के मतभेद भुलाकर, आओ! गुरुकुल महासम्मेलन को सफल बनायें

हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन सभी प्रकार के मतभेद भुलाकर किया जाये। अतः आर्य समाज के समस्त नेताओं, अधिकारियों तथा वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से सानुरोध प्रार्थना है कि हम सभी इस कार्यक्रम के माध्यम से एक मंच पर एकत्रित होने का मन बनायें ताकि समस्त आर्य जनता उत्साह एवं उमंग से ओत–प्रोत हो जाये।

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

पृष्ठ–1 का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों की महत्त्वपूर्ण बैठक उत्साह के वातावरण में सम्पन्न

सहयोग देने का आश्वासन दिया।

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने वेद ज्ञान को पूरे विश्व में फैलाने के लिए वेद के विद्वान् तैयार करने पर बल दिया और कहा कि इस कार्य को आर्ष गुरुकुलों के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। स्वामी अग्निवेश जी ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अपने सहयोग का पूरा आश्वासन दिया।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने सम्मेलन के ध्येय वाक्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस महासम्मेलन के माध्यम से जहाँ आर्ष शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने पर विचार किया जायेगा वहीं वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली के रूप में भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रस्तुत किया जायेगा। समस्त ज्ञान–विज्ञान एवं विविध विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल करके प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के साथ नैतिक शिक्षा भी अनिवार्य करने से भौतिकवाद की ओर ले जाने वाली वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विकल्प पूरे विश्व के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है। मंत्री जी ने गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राओं को भारी संख्या में सम्मेलन में शामिल करने पर बल दिया और कहा कि गुरुकुलों को महासम्मेलन के अवसर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर भी दिया जायेगा। सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने महासम्मेलन की सफलता के लिए सभी

आर्यजनों से अपील की कि वे इसे अपना दायित्व मानकर तन–मन–धन से सहयोग करें।

बैठक में सभा के उपप्रधान श्री प्रेमपाल शास्त्री ने सुझाव दिया कि सम्मेलन से पूर्व विभिन्न समितियों का गठन कर दिया जाये जो व्यवस्था में विशेष रूप से जिम्मेदारी ले सकें। सभा के उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य, उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी, श्री मधुर प्रकाश शास्त्री आदि के अतिरिक्त सर्वश्री स्वामी चन्द्रवेश, मामचन्द्र रेवाड़िया, बिरजानन्द एडवोकेट, रणवीर सिंह शास्त्री बवाना, स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल, मेघश्याम आर्य–दिल्ली, जयनारायण आर्य महाराजपुर, रमाकान्त सारस्वत आगरा, बहन प्रवेश आर्या रोहतक, रघुवीर वेदालंकार दिल्ली, चांदमल आर्य जोधपुर, हरदेव सिंह आर्य शिवगंज, राजस्थान, डॉ. लक्ष्मणदास आर्य अशोक नगर प्रधान मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा, संजय गायकवाड़, भानू प्रताप वेदालंकार, श्रीमती लता खरे इंदौर, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार मंत्री आर्य पुरोहित सभा दिल्ली, सत्यवीर चौधरी गाजियाबाद, रविदेव गुप्ता संरक्षक दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, शरद त्यागी, जय प्रकाश भारती, हाकम सिंह आर्यवंशी–उत्तराखण्ड, रामानन्द आर्य बिहार, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य–हरियाणा, रामकुमार आर्य आदि ने भी अपने सुझाव प्रस्तुत किये और सम्मेलन के लिए सहयोग की घोषणा की। बैठक उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई।

स्व. सुमरन सिंह आर्य मितरोल एवं स्व. महाशय रूपचन्द आर्य नांगल जाट को सादर समर्पित

40वाँ आर्य युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 11 जून (सोमवार), 2018 से 17 जून (रविवार), 2018 तक

स्थान : डी.जी. खान वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रेलवे रोड, पलवल

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि 11 से 17 जून, 2018 तक 'आर्य युवक परिषद्' के तत्वावधान में युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें योगासन, प्राणायाम, लाठी, जूडो–कराटे, ताईक्वाडों, दण्ड–बैठक, संध्या, हवन, संस्कार, प्राकृतिक चिकित्सा आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा योगधर्म, राष्ट्रधर्म व स्वधर्म का सम्पूर्ण मार्ग दर्शन कराया जायेगा।

आमंत्रित विद्वान् :– स्वामी आर्यवेश जी – प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. धर्म प्रकाश आर्य–पलवल, डॉ. नरेन्द्र आहूजा–पंचकूला, ठा. विक्रम सिंह आर्य–दिल्ली, श्री पूर्ण सिंह राणा संरक्षक वै.ध. प्र. सभा, डॉ. रामजीत योगाचार्य संरक्षक आ.यु. परिषद्, डॉ. अमरसिंह पौनियाँ–कोसीकलां, श्री राजेन्द्र सिंह बीसला–पूर्व विधायक, श्रीमती अलका गुप्ता–प्राचार्या, श्री विनेश आहूजा–दिल्ली, डॉ. अनिल आर्य–प्रधान के.आ.यु.परिषद्, श्री अमन सिंह शास्त्री–धर्माचार्य फरीदाबाद, डॉ. गजराज आर्य–प्रधान आ. के. सभा फरीदाबाद, श्री मदनलाल तनेजा प्रधान आ.स. सैक्टर–19, फरीदाबाद, श्री के.एल. खुराना–प्रधान आ. प्रा. उपप्रतिनिधि हरियाणा, श्री ओम प्रकाश शर्मा एडवोकेट, श्री कृष्णचन्द्र खेत्रपाल–फरीदाबाद, श्री हवा सिंह जी हुड्डा–रोहतक, श्री जगन डागर जी–पूर्व पार्षद् फरीदाबाद, श्री हरिसिंह आर्य, व्यायामाचार्य, श्री लेखराम शास्त्री व्यायाम शिक्षक।

प्रवेशार्थ नियम व शर्तें

- प्रत्येक विद्यार्थी को 100 रुपये शुल्क जमा कराना होगा।
- शिविरार्थी की नयूनतम आयु 15 वर्ष होनी चाहिए। (पासपोर्ट साईज रंगीन फोटो साथ लायें)
- शिविरार्थी को शिविर स्थल पर शिविर दिनचर्या के अनुसार पूरे समय अनिवार्य रूप से रहना होगा।
- शिविरार्थी अपने साथ भोजन पात्र, बिस्तर, कापी–पेन, लाठी, लंगोट, साबुन आदि अवश्य लायें।
- शिविरार्थी को केसरिया कच्छा, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते जुराब आदि गणवेश में रहना होगा।
- शिविरार्थी अपने साथ घड़ी, चैन, मोबाईल फोन, नकद राशि अथवा कीमती वस्तु न लायें।
- शिविरार्थी को 11 जून को दोपहर 12 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचना होगा।

विशेष जानकारी के लिए निम्न फोन नम्बरों पर सम्पर्क करें

9416267482, 8053355496, 9813507656, 9813168772, 9466431433, 9467942142

इस पुनीत कार्य में दाल, चावल, चीनी, आटा, घी, मसाले, दूध, फल, सब्जियाँ देकर पुण्य के भागी बनें।

युवक निर्माण शिविर का उद्घाटन 11 जून, 2018 को सायं 4 बजे और समापन 17 जून, 2018 को प्रातः 10 बजे होगा।

– वी.के. आर्य, शिविराध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा यमुनानगर एवं वैदिक ज्ञान आश्रम के संयुक्त तत्वावधान में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मोत्सव समारोह का शानदार आयोजन सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्बोधन

गत् 22 अप्रैल, 2018 को आर्य केन्द्रीय सभा एवं वैदिक ज्ञान आश्रम यमुनानगर के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज के महाधन पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्मोत्सव समारोह विशेष तैयारी के साथ मनाया गया। प्रातः 10 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ यह समारोह दोपहर 2 बजे तक चलता रहा जिसमें कई माताओं ने भजनों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति देकर कार्यक्रम में भागीदारी की। दो–तीन बच्चों ने सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास, यजुर्वेद का पुरुषसूक्त एवं अन्य मन्त्रों को कंठस्थ करके जब सुनाया तो श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये और उन बच्चों को भेंटस्वरूप अनेक लोगों ने धनराशि प्रदान कर प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में यमुनानगर, जगाधरी, अम्बाला तथा राजपुरा (पटियाला) तक के आर्यजन भारी संख्या में उपस्थित थे। वैदिक ज्ञान आश्रम का सभागार श्रोताओं से खचाखच भरा था। कार्यक्रम का संचालन आश्रम के संचालक पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज ने बड़ी कुशलता के साथ किया। वैदिक विद्वान् आचार्य नरेश कुमार शास्त्री ने पं. गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके जीवन की कई घटनाओं का मार्मिक विवरण प्रस्तुत किया। श्री शास्त्री जी ने बताया कि पं. गुरुदत्त विद्यार्थी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अन्तिम दर्शन करने के लिए आर्य समाज लाहौर के प्रतिनिधि मण्डल में सम्मिलित होकर अजमेर गये थे। महर्षि मौत से जूझ रहे थे और उनका अन्तिम समय एकदम निकट था। उस समय गुरुदत्त विद्यार्थी प्रभु के प्रति उनके समर्पण को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए और नास्तिक से आस्तिक बन गये। महर्षि दयानन्द सरस्वती का शरीर दिये गये जहर के कारण छलनी–छलनी हो चुका था। जहर और पारा फूट–फूटकर शरीर के ऊपर पड़े हुए छालों से बाहर आ रहा था और उनके पेट में भी भयंकर पीड़ा थी। निरन्तर खूनी दस्त और उल्टी हो रहे थे। उस अवस्था में भी महर्षि ने 'ईश्वर तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहकर ईश्वर के प्रति श्रद्धा और समर्पण व्यक्त किया जिसे देखकर गुरुदत्त विद्यार्थी का हृदय परिवर्तन हो गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए पं. गुरुदत्त विद्यार्थी को संसार का एक महान वैज्ञानिक एवं दार्शनिक बताया। उन्होंने कहा कि 26 वर्ष की अल्पायु में ख्याति की जिस चरम सीमा को स्वनामधन्य पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने लांघ दिया था उससे उनके महान व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। इतनी अल्पायु में ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त करके सामाजिक क्षेत्र में पदार्पण किया तथा अपने अथक परिश्रम व अद्भुत प्रतिभा के बल पर उन्होंने आर्य समाज की अग्रणी पंक्ति में अपना नाम लिखवाने में सफलता प्राप्त की। गुरुदत्त विद्यार्थी न केवल उच्च कोटि के लेखक थे बल्कि बहुत प्रभावशाली वक्ता भी थे जब वे बोलते थे तो सभा में गम्भीरता एवं स्तब्धता छा जाती थी। उन्होंने 'पानी' पर जो पुस्तक लिखी वह आज भी आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाई जाती है। समाज सेवा की धुन उनके जीवन में इतनी जबरदस्त थी कि दिन और रात सत्यार्थ प्रकाश तथा वेद के प्रचार में वे परिश्रम करते–करते तपेदिक जैसी घातक बीमारी के शिकार हो गये और उसी के कारण 26 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया। गुरुदत्त विद्यार्थी ने 18 बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और अपना अनुभव बताते हुए उन्होंने बताया कि जितनी बार भी मैं सत्यार्थ प्रकाश पढ़ता गया हर बार उसमें से मुझे नया ज्ञान प्राप्त हुआ। सत्यार्थ प्रकाश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए गुरुदत्त विद्यार्थी अपने बैग में सत्यार्थ प्रकाश की कुछ प्रतियाँ अवश्य रखते थे और लोगों को निःशुल्क बांटते थे। आर्य समाज के एक मिशनरी के रूप में वे आर्य समाज के पांच नियम आगे तथा पांच नियम पीछे लिखा हुआ चोंगा पहनकर हाथ में सत्यार्थ प्रकाश लेकर प्रचारार्थ लाहौर की गलियों में घूमते रहते थे। डी.ए.वी. संस्था के संस्थापक स्तम्भ महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय तथा पं. गुरुदत्त विद्यार्थी इन तीनों ने ही डी.ए.वी. आन्दोलन प्रारम्भ किया था। प्रारम्भ में डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के लिए वे धन संग्रह में भी पूरी ताकत के साथ जुटे और उसको शीघ्रातिशीघ्र प्रारम्भ करवाया। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी संस्कृत के विद्वान भी थे। उन्होंने अष्टाध्यायी पढ़कर संस्कृत सीखने में सफलता प्राप्त की थी। स्वामी जी ने कहा कि एक विज्ञान का प्रोफेसर होने के बावजूद उन्हें विश्वास था कि बिना संस्कृत पढ़े ईश्वर का सान्निध्य नहीं मिल सकेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित आर्यजनों को सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने का संकल्प भी दिलवाया।

हरिद्वार चलो

स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर आर्यों का आह्वान किया कि सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन 6 से 8 जुलाई, 2018 को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में आयोजित किया गया है। अतः सभी आर्यजन हरिद्वार आने की तैयारी अभी से शुरू कर दें। साथ ही सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग की भी स्वामी जी ने अपील की। आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से समस्त पदाधिकारियों ने तन–मन–धन से सहयोग का पूर्ण आश्वासन देकर स्वामी जी की अपील का समर्थन किया। इस कार्यक्रम में सर्वश्री स्वामी सच्चिदानन्द जी, श्री महेन्द्र सिंघल जी, श्री यश वर्मा जी, डॉ. गेंदालाल आर्य जी, श्री संजय आर्य जी, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी, श्रीमती सुमन चावला जी–राजपुरा आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। श्री महेन्द्र सिंघल ने सभी महानुभावों का तथा स्वामी आर्यवेश जी का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा दल–बल सहित हरिद्वार पहुँचने की घोषणा की। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ तथा सुस्वादु प्रीति भोज सभी ने मिलकर किया।

हम देवता बनें

– सुरिन्द्र चौधरी

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तः न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः। ऋग्वेद 8.2.18

(देवाः) देवता लोग (सुन्वन्तम् इच्छन्ति) यज्ञार्थ सोम–अभिषवनकारी को, अर्थात्, सामाजिक कल्याण करने वाले को चाहते हैं, (स्वप्नाय) स्वप्नशील, सुस्तों को (न स्पृहयन्ति) पसंद नहीं करते हैं। (अतन्द्राः) आलस्य रहित (ये देवता लोग) (प्रमादम्) भूल करने वाले का (यन्ति) सख्ती से नियमन करते हैं।

प्रस्तुत मंत्र में देवता के जो स्वरूप बताए गए हैं, वे सबके लिए अनुकरणीय हैं। देवता शब्द सुनते ही जहां सूर्य, चन्द्र, अग्नि आदि देवताओं का विचार उभरता है, वहीं मननशील मनुष्यों के मन में प्रश्न उठते हैं, क्या हम भी देवता बन सकते हैं? हम देवता कैसे बनें?

देव शब्द 'दिव्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है प्रकाशमान होना। देव शब्द में 'तल्' प्रत्यय लगाने से 'देवता' शब्द की व्युत्पत्ति होती है। आचार्य यास्क ने 'देवता' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है।

देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा। यो देवः सा देवता इति। निरुक्त 7.15

अर्थात्, जो दान देता है वह देव है। देव स्वयं द्युतिमान होते हैं, शक्तिसम्पन्न होते हैं। देव अपने गुण स्वयं अपने में समाहित किये रहते हैं। देव अपनी द्युति, शक्ति, आदि का अपने सम्पर्क में आए व्यक्तियों तक संप्रेषण करते हैं, उन्हें प्रदान करते हैं। जो देव है, वही देवता है।

इससे स्पष्ट है कि आत्मज्ञान से सम्पन्न कोई भी मनुष्य यथार्थ आचरण करके स्वयं देवता बन सकता है, चाहे वह विद्या से सम्पन्न हो या किसी अन्य संसाधन से।

सर्वानुक्रमणीकार ने कहा है, या तेन मंत्रेण उच्यते सा देवता, वेदमंत्र विशेष में, जिसके प्रति याचना है, जिसके संदर्भ में कहा जाए, उस मंत्र का वही देवता है।

मननशील मनुष्य की यह प्रवृत्ति होती है कि ज्ञान बढ़ने से, और भी अधिक ज्ञान प्राप्त करने की उसकी लालसा बढ़ती चली जाती है क्योंकि एक समाधान अनेक प्रश्नों को जन्म देता है। इस प्रवृत्ति के कारण मानव के मानस पटल पर अनेक प्रश्न उभरते हैं और पवित्र विवेकज्ञान के कारण यथायोग्य समाधान को प्राप्त कर मानव के व्यक्तित्व को परि प्रकाशित करते हैं।

देवता लोग, अर्थात् ज्ञानी–गुणी–विद्वान् लोग धन का सदा सदुपयोग करते हैं। शास्त्रकारों ने बताया है कि धन की तीन गतियाँ होती हैं – दान, भोग और नाश।

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य। यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।

दान, भोग और नाश ये तीन गतियाँ ही धन की हो सकती हैं। जो न देता है, और न भोगता है, उसके धन की तीसरी गति (नाश) हो जाती है।

मनुष्य जब धन को प्राप्त करने के लिए उत्तम पुरुषार्थ करता है, वह नहीं चाहेगा कि उसके धन को अधमगति प्राप्त हो। शेष बचे दो विकल्पों में भोग की एक सीमा है। मनुष्य सुन्दर से सुन्दर वस्त्रों, आभूषणों एवं अन्य सभी भौतिक पदार्थों पर एक सीमा से अधिक खर्च नहीं कर सकता है। ऐसी स्थिति में केवल एक ही विकल्प शेष बचता है – दान, जो कि पुरुषार्थ से प्राप्त धन की उत्तम गति है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जब हम उत्तम स्थिति को प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं तो धन की गति के संदर्भ में हम मध्यम या अधम गति से स्वयं को क्यों संतुष्ट रखें?

प्रत्येक को अपनी आवश्यक जरूरतों को पूरा करने के बाद अधिक से अधिक दान द्वारा नेक कमाई का सदुपयोग करते हुए इहलोक के साथ–साथ परलोक को भी सुधारने का प्रयास करना चाहिए। अथर्ववेद (3.29.1) में समाज कल्याण (इष्ट आपूर्त) के लिए राज्य शासन को अपनी कमाई का सोलहवां भाग दान करने का निर्देश दिया गया है इसके लिए हमें हर संभव प्रयास अवश्य करना चाहिए।

धन के अलावा विद्या, अर्थात्, ज्ञान का दान भी दिया जा सकता है। हम जानते हैं कि ज्ञान को जितना बांटा जाए, वह उतना ही बढ़ता है। फिर हम विद्या का दान करने में संकोच क्यों करें। संसाधन दान में अन्नदान, श्रमदान, गोदान के अतिरिक्त हम सब प्रयोग किए जा चुके ऐसे भौतिक पदार्थों का दान भी कर सकते हैं जिनकी हमें आवश्यकता नहीं रही। ऐसे साधन हमारे लिए नहीं तो अभावपूर्ण जिन्दगी गुजार रहे परिवारों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो सकते हैं।

कुछ अन्य प्रकार के दान भी हैं, जैसे रक्तदान, नेत्रदान, अंगदान और देहदान। परन्तु दुःख की बात यह है कि रक्तदान, नेत्रदान आदि में हममें से अधिकांश की भागीदारी नगण्य है। रक्तदान किसी भी स्वस्थ मनुष्य द्वारा तीन मास के अन्तराल पर किया जा सकता है। हम इस भ्रांति को दूर करें कि रक्तदान करने से शारीरिक कमजोरी आती है। हम इस भावना को अपनाएं कि 'जीते जी रक्तदान, मरणोपरान्त नेत्रदान।'

मृत्यु के बाद नेत्रदान या अंगदान से किसी जरूरतमंद को नया जीवन मिल सकता है। आज ही प्रण करें कि जीते जी यथा सम्भव रक्तदान करेंगे और मृत्यु के उपरान्त नेत्रदान, अंगदान एवं देहदान के द्वारा सद्गति प्राप्त करके परलोक को सुधारने का प्रयास करेंगे।

लोक में कहावत है, 'दानशील ही भाग्यवान् बनता है।' दान से हिंसा और द्वेष का अंत होता है। दान–पुण्य करने से अन्तःकरण पवित्र होता है। दान करने पर मन में असीम शांति का अनुभव होता है। इहलोक में दिया गया दान विशुद्ध कर्माशय का रूप लेकर परलोक को भी सुधार देता है। अतः जब कभी भी कोई शुभ विचार मन में आए, उसे उसी समय क्रियान्वित करें। दान देना अति शुभ कर्म है, इसलिए मन में दान का विचार आते ही शीघ्रता से उसे क्रियान्वित करते रहें।

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृतिदिवस, संतानों के जन्मदिवस, आदि विशेष महत्त्व वाले दिवसों पर दान देकर इन दिवसों को हम अधिक यादगार बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त हमें जीवन यात्रा के दौरान अनेक अवसरों पर जरूरतमंदों द्वारा सहयोग के लिए आग्रह किया जाता है। उनके आग्रह की सत्यता जानने के उपरान्त हम उनकी जरूरतों को पूरा करके देवता बन सकते हैं।

सारांश में, हम स्वयं पर ही केन्द्रित न रहें, अपितु समाज के लिए कुछ करने का प्रयास करते हुए देवता बनने की शुरुआत करें।

मानव निर्माण एवं विश्व शांति संस्थान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, आर्य समाज जयपुर दक्षिण एवं जी.एल. सैनी नर्सिंग कॉलेज द्वारा आयोजित

आर्य कन्या संस्कार निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर

उद्घाटन एवं ध्वजारोहण – मंगलवार, 1 मई, 2018 को प्रातः 11 बजे तक

समापन समारोह – पारितोषिक वितरण एवं व्यायाम प्रदर्शन रविवार, 6 मई, 2018, सुबह 10 बजे से ऋषि लंगर के साथ

स्थान – 'संस्कार भवन' जी.एल. सैनी कॉलेज ऑफ नर्सिंग, 7–8, राधा निकुंज सी, मुहाना मंडी रोड, केसर नगर चौराहे से रामपुरा रोड, जयपुर (राज.)

एक निवेदन अभिभावकों से :– वर्तमान समय के सामाजिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक कुसंस्कारों एवं आधुनिकता के नाम पर संस्कारविहीनता, नशा, कुसंगति, वृद्ध सम्मान भावना का अभाव अश्लीलता आदि की विसंगतियों से हमारे बच्चे एवं युवा ग्रसित हैं। जिससे उनमें अनेक शारीरिक रोग मानसिक विकार एवं आध्यात्मिक विकृतियाँ जड़ फैलाये जा रही हैं। दुर्व्यसनों से मुक्त कराने एवं स्वस्थ, बुद्धिमान, सतर्क, ज्ञानवान, सक्षम एवं सुयोग्य व्यक्तित्व के धनी बनाने हेतु आचारणशील विद्वानों एवं प्रशिक्षकों की देख–रेख में आयोजित इस शिविर में अपने बच्चों को अवश्य भेजें।

शिविर के आवश्यक नियम :– शिविरार्थी स्वस्थ 12 से 25 वर्ष आयु के हों। 100 रुपये पंजीकरण शुल्क 25 अप्रैल तक जमा कराना अनिवार्य है। शिविरार्थी अपने साथ मौसम अनुकूल पहनने के कपड़े, कान तक की लाठी, सफेद सलवार–कुर्ता, नारंगी चुनरी सफेद पीटी शूज, सफेद मोजे, दो नए फोटो, पेन, टॉर्च, तेल एवं साबुन इत्यादि लायें। शिविरार्थी 1 मई को सुबह 9 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचे।

– यशपाल 'यश' शिविर अध्यक्ष , मो.:–09414360248

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर, मध्य प्रदेश में

25वाँ सर्वजातीय युवक–युवती परिचय सम्मेलन

इन्दौर, 25वाँ सर्वजातीय युवक–युवती परिचय सम्मेलन, स्थान–संतोष सभागृह (चरक अस्पताल), रानी सती गेट, इन्दौर, मध्य प्रदेश में आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर एवं अखिल भारतीय आर्य सभा, मध्य प्रदेश के तत्वावधान में दिनांक 27 मई, 2018 (रविवार) को आयोजित किया जा रहा है। सर्वजातीय परिचय सम्मेलन के संयोजक श्री बलराज सबलोक जी ने बताया कि इस परिचय सम्मेलन में लगभग 300 प्रत्याशियों की प्रविष्टियाँ प्राप्त हो गई हैं, परिचय सम्मेलन के अवसर पर सर्वजातीय परिणय–स्मारिका का भी विमोचन होगा। इस सर्वजातीय परिणय स्मारिका में जो प्रत्याशी अपना फोटो, बायोडाटा प्रकाशनार्थ देना चाहते हैं वे शीघ्र ही कार्यालय – आर्य समाज संचार नगर कनाड़िया रोड, इन्दौर में सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रणवीर शास्त्री ने कहा कि सर्वजातीय परिचय सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है कि हिन्दु समाज की संकीर्ण जातिवाद, छूआछूत एवं आरक्षण जैसे कुरीतियों को दूर करने हेतु गुण–कर्म–स्वभाव का चयन करते हुए रोटी–बेटी का सम्बन्ध स्थापित करके दिव्य समाज का निर्माण करना।

– विशाल देवड़ा, प्रचार सचिव

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा 101 लोगों का सम्मान तथा कई पुस्तकों का होगा विमोचन

इन्दौर, साहित्य संगम संस्थान राष्ट्रीय पंजीकृत संस्था 27 मई को इंदौर में आयोजित सम्मान समारोह एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में देश के लगभग 70 सम्माननीय साहित्यकारों को सम्मानित करने जा रहा है।

श्रीमती गायत्री सोलंकी ने बताया कि इस सम्मान समारोह में श्री अनिल अयान, श्रीमती सुवर्णा जाधव, श्रीमती रति ओझा व्यथा, श्री छगन लाल गर्ग, श्रीमती देवयानी नायक, श्रीमती मनीषा जोबन देसाई आदि 101 साहित्यकारों का सम्मान होगा। इस सम्मान समारोह में मध्य प्रदेश के अलावा गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तराखण्ड, बिहार, असम, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रदेशों के साहित्यकारों का ऐतिहासिक सम्मान साहित्य संगम संस्थान के द्वारा दिनांक 27 मई, 2018 (रविवार) संतोष सभागृह रानी सती गेट, इन्दौर में आयोजित किया गया है।

इस सम्मान समारोह के संयोजक आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार एवं डॉ. अरूण श्रीवास्तव जी ने बताया कि ध्यातव्य है कि संगम संस्थान इलेक्ट्रॉनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कार्य करते हुए लगभग तीन हजार प्रमाण पत्र ऑनलाइन जारी कर चुका है। जो कि प्रतिदिन दिए गए एक विषय पर लिखने वाले साहित्यकारों, टिप्पणीकारों, ऑनलाइन काव्य सम्मेलन सहित ऑनलाइन छंद परीक्षाओं, निबंध कविता लेखन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों और विजेताओं को तथा ई–साहित्य में योगदान करने वाले साहित्यकारों को ऑनलाइन डिजिटल प्रमाण पत्रों से सम्मानित करता रहता है।

– श्रीमती गायत्री सोलंकी, प्रेस सचिव

आर्य जगत् के महान् वीतराग संन्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) के जन्मदिवस के अवसर पर दयानन्द मठ चम्बा में 4 से 6 मई, 2018 को होगा

विशाल आर्य महासम्मेलन

महासम्मेलन में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी मुख्यअतिथि के रूप में 4 मई, 2018 को महासम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं दयानन्द मठ चम्बा के संरक्षक स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सवितानन्द जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य रामानन्द जी शिमला, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के प्रधान श्री प्रबोध चन्द्र सूद एडवोकेट व वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामफल आर्य आदि वैदिक विद्वान् कार्यक्रम में शामिल होंगे। इनके अतिरिक्त वरिष्ठ संन्यासीगण, विद्वान् एवं भजनोपदेशक आदि भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ायेंगे।

आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है, भारी संख्या में पहुँचकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, मध्य प्रदेश के तत्वावधान में (रविवार) 20 मई, 2018 से 27 मई, 2018 तक विशाल युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर

स्थान – प्रज्ञा गर्ल्स स्कूल, विद्यासागर स्कूल के पास, बिचौली मर्दाना, इन्दौर (म. प्र.)

उद्घाटन समारोह – (रविवार) 20 मई, 2018 को सायं 5 से 7 बजे तक **समापन समारोह – (रविवार) 27 मई, 2018 को सुबह 8 से 11 बजे तक**

इन्दौर, राष्ट्रीय भावना, अनुशासित जीवन, नैतिक शिक्षा तथा युवा पीढ़ी को वैदिक सिद्धान्तों की विचारधारा से ओत–प्रोत करने तथा शारीरिक व बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने तथा उच्चकोटि के व्यायामाचार्य द्वारा योगासन, प्राणायाम, लाठी, जूडो–कराटे, स्तूप, लेजियम, डम्बल आदि आत्मरक्षा सम्बन्धी शिक्षण के साथ–साथ वैदिक विद्वानों द्वारा संन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा, भाषण कला, नेतृत्व कला व आत्मविश्वास के विकास हेतु शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अतः अपने बालकों को संस्कारित करने के लिए शिविर में अवश्य भेजें। विस्तृत जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें।

– आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार, अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

प्रवेश प्रारम्भ

श्री सर्वदानन्द गुरुकुल एवं संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़, उ. प्र. में शिक्षा सत्र 2018–19 हेतु कक्षा–6 और कक्षा–9 में प्रवेश 1 मई, 2018 से प्रारम्भ होंगे। कृपया शीघ्रता करें, स्थान सीमित हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय में छात्रों की सुरक्षा, स्वास्थ्य, भोजन व निवास की सर्वोत्तम व्यवस्था है। यह गुरुकुल गत 117 वर्षों से उच्च कोटि के संस्कृत स्नातकों का निर्माण करता रहा है। गुरुकुल का शिक्षा पाठ्यक्रम कक्षा–6 से मध्यमा तक उत्तर प्रदेश संस्कृत शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत है और शास्त्री व आचार्य का पाठ्यक्रम श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय बनारस, उत्तर प्रदेश द्वारा स्वीकृत है। खेल–कूद व व्यायाम आदि का उत्तम प्रबन्ध है। विद्यालय का वातावरण शान्त और स्वास्थ्यवर्द्धक है।

कोई शिक्षण शुल्क नहीं है। मात्र भोजन और निवास का न्यूनतम शुल्क देय है। गुरुकुल तक आने–जाने के यातायात साधन हर समय उपलब्ध हैं। विशेष जानकारी हेतु प्राचार्य प्रो. जीवन्त सिंह जी से मोबाइल नं. –9719375848 पर सम्पर्क करें।

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से सभा कार्यालय "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास गौतमनगर, दिल्ली द्वारा संचालित शाखा नं.–6 श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल देवालय, गौमत वाया खैर, जिला–अलीगढ़, उत्तर प्रदेश का 10वाँ वार्षिकोत्सव एवं सामवेद पारायण महायज्ञ तथा वैदिक सत्संग

दिनांक 11 मई, 2018 (शुक्रवार) से 13 मई, 2018 (रविवार) तक

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि आपकी प्रिय संस्था श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल देवालय गौमत का 10वाँ वार्षिकोत्सव 11 से 13 मई, 2018 तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें उच्चकोटि के वैदिक विद्वान्, भजनोपदेशक व साधु संन्यासी पधार रहे हैं।

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य चन्द्रदेव जी फरुखाबाद

भजनोपदेशक : श्री सुमित्र आर्य बिजनौर, श्री चतर सिंह आर्य, श्री रणजीत सिंह आर्य

दैनिक कार्यक्रम : प्रतिदिन प्रातः काल 8 से 10.30 बजे तक यज्ञ व भजनोपदेश, दोपहर 12.30 से 3.00 बजे तक भजन व प्रवचन, प्रतिदिन सायं 4.00 से 6.00 बजे तक यज्ञ व उपदेश, 8 से 10.00 बजे तक गुरुकुल सम्मेलन गुरुकुल प्रांगण में।

यज्ञ की पूर्णाहुति एवं आर्शीवाद 13 मई, 2018 (रविवार) प्रातः 8 से दोपहर 1.00 बजे तक।

आमंत्रित विद्वान एवं नेतागण :– अध्यक्षता श्री ठाकुर विक्रम सिंह आर्य, मुख्य अतिथि पं. माया प्रकाश त्यागी–कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम से लाभ उठायें।

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, संरक्षक एवं संचालक

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर–7 का 49वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 13 से 15 अप्रैल, 2018 को आर्य समाज के प्रांगण में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दिनांक 12 अप्रैल, 2018 को एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई, इस अवसर पर आर्य जगत् से सुप्रसिद्ध ख्यातिलब्ध विदुषी साध्वी डॉ. उत्तमा यती जी (अजमेर), आचार्य राम प्रसाद जी (कानपुर देहात), पं. संदीप वैदिक (मुजफ्फरपुर), पं. राम सेवक आर्य प्रज्ञाचक्षु (हमीरपुर) आदि अनेक उपदेशक, भजनोपदेशक, संन्यासी व वानप्रस्थी आदि उपस्थित थे। उपदेशकों ने बताया कि आर्य जाति की उन्नति आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं स्वामी दयानन्द के वेदोक्त विचारों से ही सम्भव है। पं. संदीप वैदिक जी एवं श्री रामसेवक जी के सुमधुर भजनों ने सभी जनसमूह को मन्त्रमुग्ध किया। इस अवसर पर 100 सत्यार्थ प्रकाश केवल मात्र 30 रुपये में उपलब्ध कराये गये। जिसको लेने वालों का उत्साह देखते ही बनता था। इस अवसर पर दिनांक 15 अप्रैल, 2018 को ऋषि लंगर का आयोजन किया गया जिसको पाकर सभी तृप्त हुए। आर्य जनता एवं क्षेत्रीय निवासियों ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

– सियाराम आर्य, मंत्री, आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर–208007 (उत्तर प्रदेश)

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 दूरभाष :–011–23274771, 23260985

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

ओ३म्

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

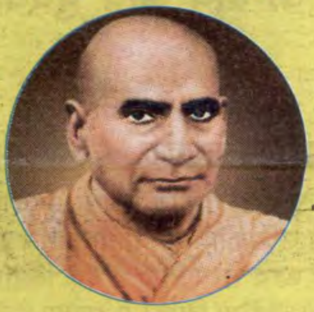

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018
स्थान : गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार
(विद्यालय विभाग के प्रांगण में)

मान्यवर,

विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का आयोजन 6 से 8 जुलाई, 2018 को गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड के प्रांगण में किया जा रहा है। आर्य समाज के इतिहास में यह पहला अवसर है जब समस्त गुरुकुलों का अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हो रहा है। आप सभी से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में हरिद्वार पहुँचकर महासम्मेलन में शामिल हों तथा इस ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बनें।

मुख्य आकर्षण

1. देश–विदेश के गुरुकुलों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं का अभूतपूर्व समागम
2. गुरुकुलों के छात्र–छात्राओं द्वारा आकर्षक एवं अद्भुत कार्यक्रमों की प्रस्तुति।
3. विख्यात आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, आचार्यों, आचार्याओं, आर्यनेताओं एवं राजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति तथा भाषण।
4. सस्वर वेद पाठ, कंठस्थ वेद–वेदांग एवं अष्टाध्यायी आदि की प्रस्तुति।
5. संस्कृत संभाषण एवं नाटिकाओं आदि प्रतिभाओं का प्रदर्शन।
6. गुरुकुलों के इतिहास की शानदार प्रदर्शनी।
7. आर्ष शिक्षा प्रणाली को वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली घोषित करने का प्रस्ताव।
8. समस्त गुरुकुलों के पाठ्यक्रम एवं कार्यशैली की एकरूपता का प्रयास।
9. आर्ष शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली बनाने की योजना तैयार करना।

आप सभी से प्रार्थना है कि भारी संख्या में पधारकर तन–मन–धन से सहयोग करें।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985, ई–मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 4100/– रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 18 मार्च, 2018 तक अग्रिम धनराशि जमा कराने पर केवल 2800/– रुपये में प्राप्त कर सकेंगे।

4100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत यजुर्वेद भाष्य भारी छूट पर उपलब्ध

250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य

मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)

(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।